ोटी-सी मुस्कान दो

अभिरंजन कुमार

आत्माराम एण्ड संस

दिल्ली लखनऊ

ISBN 81 7043 498 X

प्रकाशक आत्माराम एड सस
कश्मीरी गट दिल्ली 110006

शाखा 17 अशोक मार्ग लखनऊ

प्रथम सस्करण 2002

मूल्य 75 00 रुपए

लेजर कम्प्यटेक सिस्टम दिल्ली-110093

मुद्रक बी के आफसेट नवीन शाहदरा दिल्ली 110032

ह भाग्त माता '
बहुत बडी हा तुम, बान ह गीत मभी मर
कसम लहू की, मदा रहूँगा चरणा म तर।

उनको
जिन्होने बच्चो के लिए
मुस्कान जुटाने का
काम किया है।

कवि कथन

मुझे अक्सर ऐसा अहसास होता रहा है कि छोटे-छोटे बच्चे भी कुछेक बड़े लोगों की दुनिया से कहीं बहुत बड़े होते हैं। ब्रह्मांड की एक-एक चीज— चींटी से लेकर बड़े-बड़े पशु-पक्षियों तक, हरी-हरी नन्ही दूब से लेकर विशाल-बड़े-लंबे-चौड़े वृक्षों तक, झरनों से नदी-नाले-ताल-तलैया, झील-महासागर तक, धरती से लेकर अंबर के सूरज-चाँद-सितारे तक की एक-एक चीज उनमें अनूठे कौतूहल और जिज्ञासा का सृजन करते हैं। उनके हृदय की, उनकी अनुभूतियों की, उनकी कल्पनाओं के विस्तार इतने व्यापक होते हैं कि एक तो क्या, अनेकानेक काव्यों में भी उन्हें बाँध पाना नामुमकिन ही है।

यहाँ मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि मुझे हिंदी के उन तमाम आलोचकों और साहित्यकारों से गंभीर शिकायत है, जो बाल-साहित्य को हल्का-फुल्का [illegible] बताकर पिछली [illegible] में इस मुख्य धारा में जगह देने से कतराते रहे हैं। यह न सिर्फ साहित्य के एक बड़े और महत्वपूर्ण हिस्से के साथ अन्याय है, बल्कि देश के करोड़ों बच्चों और बचपन का सरासर अपमान भी है। उम्मीद की जानी चाहिए कि उनके इस अतार्किक रवैये में बदलाव आएगा।

बहरहाल, इस संकलन की खास बात यह है कि इनकी करीब डेढ़ दर्जन कविताएँ बालक अभिरंजन ने लिखी हैं—दस से पन्द्रह वर्ष की उम्र के बीच। हालाँकि यहाँ इन कविताओं को छंद एवं व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ दुरुस्त करके ही पेश किया गया है। कविताओं के रचना-वर्ष अनुक्रम में हो इनके शीर्षक के साथ कोष्ठक में दे दिए गए हैं। चूंकि किसी भी रचनाकार के जीवन में शुरुआत की रचनाएं बाद की रचनाओं से कम अहमियत नहीं रखतीं, भले ही उनका साहित्यिक मूल्य कुछ भी हो—इसीलिए मैंने इस संकलन में अपनी शुरुआत और बाद की रचनाओं को समान महत्त्व दिया है और कविताओं का क्रम तय करते हुए लेखन-क्रम या परिपक्वता की बजाय सिर्फ उनकी विषय वस्तु का ही ध्यान में रखा है। लिहाजा इस संकलन की पहली कविता वो है जिसे मैंने दस साल की उम्र में लिखा।

संभव है, पाठक संकलन की कई कविताओं से पूर्व परिचित भी हों, क्योंकि इनमें से ज्यादातर कविताएं बालहंस, बाल भारती, चकमक, विज्ञान-प्रगति, राष्ट्रीय सहारा, जनसत्ता और हिन्दुस्तान सहित कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

अंत में मैं अपने बड़े भाई श्री मनोरंजन कुमार, जिन्होंने कई महत्वपूर्ण रचनाओं पर मूल्यवान सुझाव दिए हैं एवं मासिक बाल पत्रिका 'चकमक' के सम्पादक श्री राजेश उत्साही जिन्होंने नयी जमीन की कविताएं लिखने की प्रेरणा दी, के प्रति आभार प्रकट करता हूं। लेकिन मैं सबसे ज्यादा आभारी उन छोटे-छोटे, नन्हे-मुन्ने मासूम बच्चों का ही हूं, जिनकी उंगलियां पकड़कर उनका यह बड़ा दोस्त साहित्य की दुनिया में कदम रख रहा है।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

दिल्ली

अभिरंजन कुमार

अनुक्रम

रहूँगा चरणा म तर (1986)	7
सबकुछ मुझको प्यारा ह (1990,	9
भारत मा का नाम कर (1994)	11
इश हमार ज्ञान दा (1996)	13
प्यारी मम्मी तुम मत कहना (1996)	15
रामराज्य की ओर चल (1991)	16
नानाजी क खत म (1996)	18
खलग ता-ता थया (1995)	20
परना कुट्टी आज स (1995)	21
भोलू की पीडा (1995)	22
मरा वटा फूल (1995)	24
मुन्ना आया गाँव (1995)	26
काश, राज एसा हाना (1995)	28
मे ना इक छोटी बच्ची हूँ (1989)	30
हूँ शहजादा (1990)	31
परिवार हमारा (1992)	32
पापा प्यार वडा देत हे (1998)	33
एम हे बाबा मर (1994)	35
गर्मी क मासम मे (1998)	37
बादल गरजे घुडुम-घुडुम (1996)	38
सिकुड गइ हे पूरी दुनिया (1996)	39
सबस प्यारा हे बसत ऋतु (1998)	41
नदियाँ (1986)	43
भोर (1994)	44
पछी अपने यारो से (1987/98)	46
तितली रानी आना री (1998)	48
शेतानी का फल (1990)	50
शरारती बदर (1988)	52
मरी बिल्ली (1986)	53
विल्ली ओर चूहा (1989)	54
काश, राज ही आती होली (1987)	55
ऊँचा रह तिरगा (1988)	56
राखीवाला (1985)	58
आया दशहरा (1998)	59
दीपो का त्योहार (1988)	61
वाह, पटाखो का क्या कहना ! (1996)	63
हीरा, सोना ओर कोयला (1986/96)	65
कुट्टी का कारण (1987/95)	67
क्यो गिरती है ओस की बूँदे (1996)	69
परमाणु के मूल कण (1993)	71
जीवन चक्र (1989)	72
कॉटो का सुख (1987)	73
बूँद पसीने की मोती है (1988)	74
हम गुलाब-पकज (1996)	76
मधुवन के बच्चे (1993)	78

रहूँगा चरणों मे तेरे

जय-जय-जय-जय भारत माता, म हूँ तरा लाल।
तुमन मुझको पाला-पासा, हिय म रखा सभाल।।

धन्य-धन्य ! तू मइया मरी, अहाभाग्य मर।
कमम लहू की, सदा रहूँगा चरणा म तर।।

राम, कृष्ण, गातम तरे चरणा म हुए वड।
रावण-कुम्भकरण-कसा क पापी प्राण हर।।

अन दवताआ की भी माँ आ माँ तुम्हीं वनी।
तरी चरण-धूलि पाकर म भी हा गया धनी।।

वद-पुराण सभी ने ही ता ह तरा गुण गाया।
सार देश विवश थे सोये, तुमन उन्ह उठाया।।
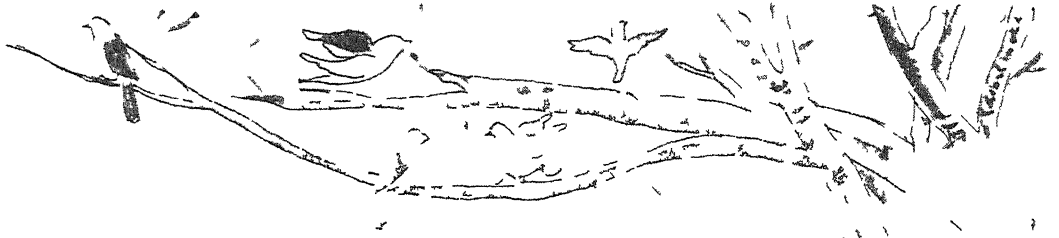
मॉ ममता की मूरत हो तुम, ऑखे प्यार भरी।
लुटा रही हो सुख-सुविधाएँ मुझपर घडी-घडी।।

सागर तेरे पग धोता हे, कल-कल गीत सुनाता।
सन-सन का स्वर लिय पवन हे तुमको चँवर डुलाता।।

बना हिमालय मुकुट तुम्हारा, गगा-यमुना ऑचल।
हृदय तुम्हारा पेड-चिरैया-गेहूँ-गइया-बादल।।

बहुत बडी हो तुम, बोने हे गीत सभी मेरे।
कसम लहू की, सदा रहूँगा चरणो मे तेरे।।
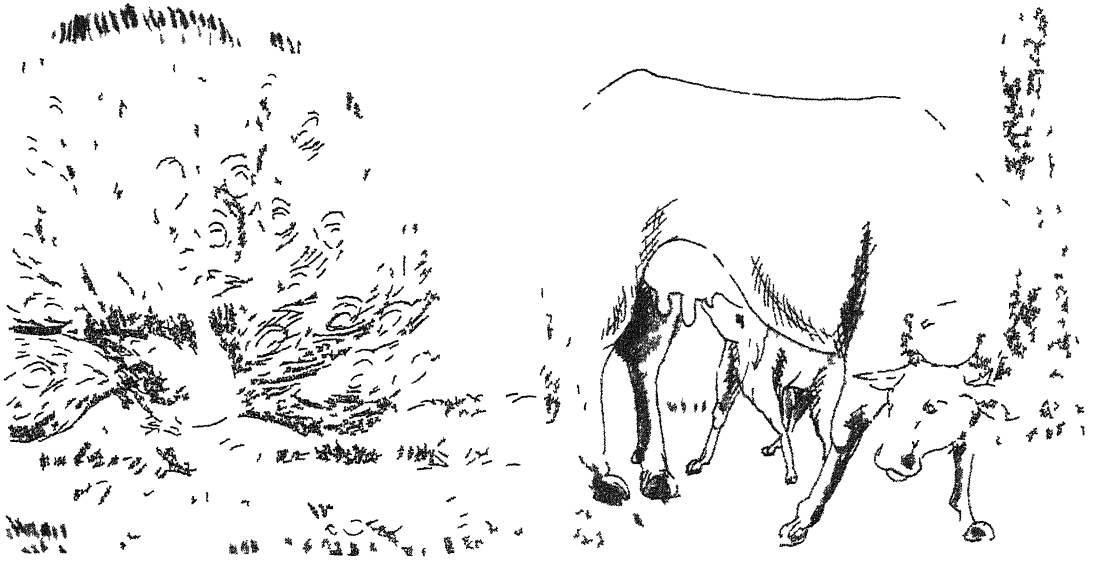
सबकुछ मुझको प्यारा है

अपने प्यार हिन्द दश का
सबकुछ मुझको प्यार ह।

खेतो म फसल लह-लह ह
नदियो मे कल-कल पानी।
ऊँचे पड-पहाडा पर ह
गाती चिडियो की गनी।
रग-बिरगे मौसम भइया
गर्मी-वर्षा-जाडा हे।

बैल बजाते टुन-टुन घटी
भैस खडी पगुराती हे।
गाय-बकरियाँ मैदानो मे
दूब हरी चुन खाती ह।
चरवाहा छाया मे बेठा
गाता दिर-दिर-दारा हे।

राम-कृष्ण-गौतम की धरती,
नेताजी का यह आँगन।
लाला, तिलक, भगतसिह, बिस्मिल,
लालबहादुर, मोहनमदन।
गाँधी बेटा तो भारत माँ
की आँखा का तारा ह।

भारत माँ का नाम करे

(मच पर एक तरफ से गुडिया आती हे, दूसरी तरफ स गुड्डा)

गुडिया –
मै हूँ गुडिया, पली-बढी हूँ स्नह-प्यार की छाँव म।
मेरे जेसी हाशियार है नही समूच गाँव म।
सबसे पहले सुबह जगूँ, फिर झटपट-झटपट काम करूँ
बाँध के डेने तन पर, बिजली भरकर अपन पाँव म।

गुड्डा –

म भी अच्छा हूँ गाता हूँ वडी सुरीली तान मे।
कभी नही डरता-घबराता, जीता अपनी आन म।
दिन भर करूँ पढाई जमकर, पर आते ही शाम सुना –
दौड पडूँ मैदान खेलने कह मम्मी के कान म।

गुड़िया –

फिर तो दोस्त बनो तुम मेरे, मिलकर अच्छे काम करे।
हमे सफलता मिले, जगत मे भारत माँ का नाम करे।

गुड्डा –

हाँ, हम दोस्त बनेगे, करता हूँ मै तुमसे यह वादा।
उच्च विचार हृदय मे रखकर जीना है जीवन सादा।

(दोनो खुशी-खुशी मच से प्रस्थान करते है)

ईश हमारे ध्यान दो

ईश हमारे ध्यान दो। ईश हमारे ध्यान दो।।

दादाजी का प्यार मिले नित, दादी माँ का गीत हमें
भैया से कुश्ती लड़ने में रोज चाहिए जीत हमें।
देखो तो यह लदा हुआ जो हमपर बस्ता है भारी
इन्हें फेंककर खेल-कूद का हमें बहुत सामान दो।
ईश हमारे ध्यान दो। ईश हमारे ध्यान दो।।

टीचर जी को भी तो डाँटो, बहुत पिलाते डाँट हमें
छोटी-मोटी कमियों पर भी उनसे मिलती चाँट हमें।
कितने चाँटे खाएँ, कितना बोझ सहे कोमल तन पर
हमें सताया करते जो-जो, उन्हें बुद्धि दो, ज्ञान दो।
ईश हमारे ध्यान दो। ईश हमारे ध्यान दो।।

रोज झगड़कर भी इनका प्यार ही लगता है भैया
छोटी बहन चले नन्ही से, ठुमुक-ठुमुक, ता-ता-थैया।
मम्मी हम सबकी प्यारी है, उन्हें न कोई गम देना
प्यारे पापा के होठों पर मीठी सी मुस्कान दो।
ईश हमारे ध्यान दो। ईश हमारे ध्यान दो।।

और हमारी भारत माँ भी मम्मी जैसी है प्यारी
अच्छे सारे खेत यहाँ के, अच्छी है नदियाँ सारी।
हवा बहुत अच्छी, गाते हे पक्षी सुन्दर गीत मधुर
प्रभुजी, इसके हर आँगन मे खुशियो की भर खान दो।
ईश हमारे ध्यान दो। ईश हमारे ध्यान दो।।

रामराज्य की ओर चले

पकड़ क्षितिज के छोर चले।
हम रामराज्य की ओर चले।।

जहाँ न कोई ऊँचा-नीचा।
बने हिन्द सम्पूर्ण बगीचा।।
किसलय, कोपल औ' फलियों को।
मौका मिले सभी कलियों को।।

हँस-हँसकर खिल-खिल जाने का।
बन सुवास-चहुँदिश छाने का।।

बाधाएँ सब तोड चलें।
हम रामराज्य की ओर चले।।

जहाँ न धरती नीची है
नहि आसमान ही ऊँचा है।
जहाँ परस्पर गलबाँही मे
यह ब्रह्माड समूचा है।
– यही है क्षितिज ।

नानाजी के खेत मे

आआ चलकर खले-कूदे नानाजी के खेत मे।

कभी बेल की पूँछ पकडकर दूर-दूर तक भागगे
नानाजी क कन्धो पर चढ उनकी मूँछ उखाडेग।
हम भी पगडी बॉध, लाठियॉ ले हाथो म घूमेगे
धरती मेया की माटी को सिर पर लेगे, चूमेगे।
खीर-खरबूजे-ककडी हे वहॉ आजकल लगे हुए
ताड-तोड खाएँगे, जब कूदग चूह पेट मे।

डॉटग जी भर उसका, जा आएगा कग्न चागे
हम भी हाथा म खुरपी ल काडग मिट्टी थाडी।
हरे-हरे पोधे रोपग, कण-कण हागा हग-भग
होगी स्वच्छ हवा भी, खुद को भी आएगा मजा बडा।
क्या रक्खा हे झूठ-मूठ के चूल्हा आग घगदा म
नही लोटन जायग अब स बिन मतलब ग्त म।

आआ चलकर खल-कूदे नानाजी क खत म।
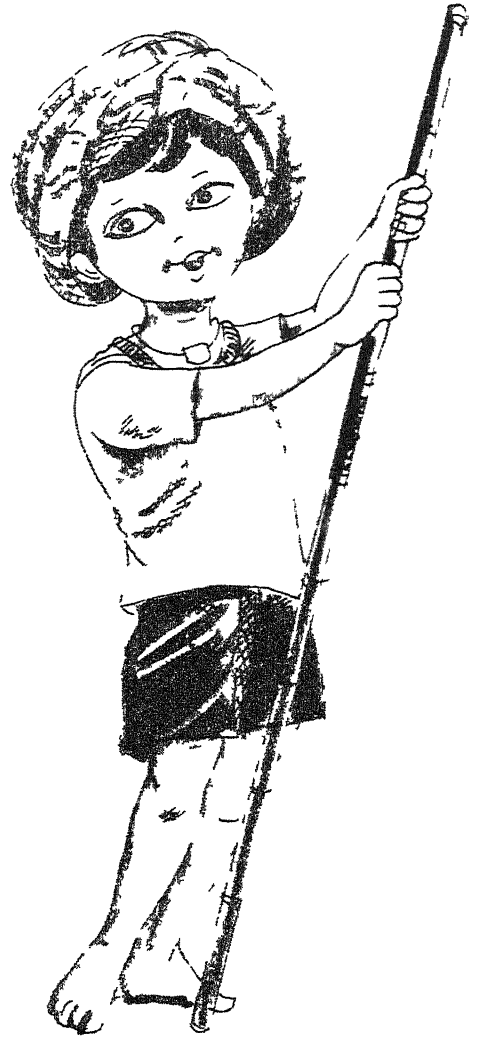
खेलेगे ता-ता थैया

पॉच वरस का हूँ म, मम्मी
मुन्ना ह दा साल का।
पर गुमान ह उसका अपन
रुइ नम गाल का।

नही तनिक भी करन दता
ह मुझको वह प्यार कभी।
कभी नाचता बाल हमारे,
ग पडता मुँह फाड कभी।

जग उस समझा दो ना
मम्मी, मे हूँ उसका भेया।
लकर साथ उस भी तब
हम खेलगे ता-ता थेया।

वरना कुट्टी आज से

मुन्न न चुपक म कर दी
कल जा गीली खाट।
हँसकर बाली मम्मी –
यही बना ह गगा-घाट।

मुन्ना करे बुग या अच्छा
मम्मी हँसती रहती।
'ऐसे नही, करा ऐस –
केवल मुझको ही कहती।

आज सोचता हूँ कह दूँगा
दुखी-दुखी आवाज से –
'प्यार करो मुझका भी मम्मी,
वरना कुट्टी आज से।'

भोलू की पीडा

आठ किताबे, सोलह कॉपी
ओर कलम के साथ दवात।
पॉच साल के नन्हे भोलू
के बस्ते की हे ये बात।

चढ जाता है सुबह पीठ पर
बोझ बना रहता दिन भर।
देह पसीना रोता, ऑखे
रोती है ऑसू झर-झर।

जब बजते है चार शाम के
तभी उनरता यह बस्ता।
होती है तो होवे, तब तक
भोलू की हालत खस्ता।

पुन रात मे सबक बनाने
घटो बैठा रहता हे।
दिन भर के थक गए बदन का
दर्द मौन हो सहता हे।
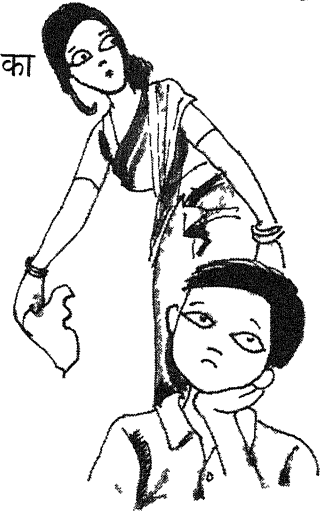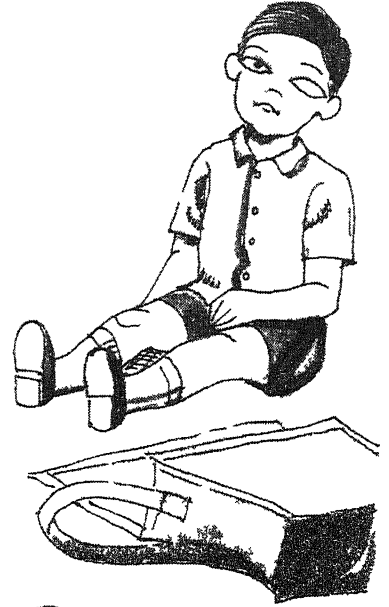
ब खले, कब कूद,
ब नाच, कब धूम मचाए
ब चिडियो-सा चहक
ुन्दर फूला-सा मुस्काए

ारी-सी मम्मी भी ता
ुछ नही समझती पीडा।
काई जो भालू के दुख
रने का ल बीडा ?

मेरा बेटा फूल

तीन साल का मुन्ना, माँ बोली – "जाओ स्कूल।"
मुन्ना लगा सिसकने – "जाऊँ केसे उतनी दूर ?

मम्मी, थक जाएँगे मेरे नन्हे-नन्हे पाँव
आ जाता क्या नही शहर से ईसकूल' ही गाँव ?

भोलू कहता था 'टीचर जी रखत छडी सभी दिन
बात-बात पर पीटा करते ताक धिना-धिन धिन-धिन।

भोलू का बस्ता भी तो हे मम्मी कितना भारी
मे तरा राजा बेटा हूँ, नही सवारी गाडी।''

यह कहकर मायूस हा गया ओर जोर से रोया
सुबह-सुबह ऑसू से ही अपने गालो का धोया।

मम्मी को आ गइ दया, बोली ''मत जा स्कूल,
ये दिन है हॅसने-गाने के, मेरा बेटा फूल।''

मेरा बेटा फूल

तीन माल का मुन्ना, मॉ बाली — "जाओ स्कूल।"
मुन्ना लगा सिसकने — "जाऊॅ केसे उतनी दूर ?

मम्मी, थक जाएंगे मेरे नन्हे-नन्हे पॉव
आ जाता क्या नही शहर से 'ईसकूल' ही गॉव ?

भोलू कहता था 'टीचर जी रखत छडी सभी दिन
बात-बात पर पीटा करते नाक धिना-धिन धिन-धिन।

भोलू का बस्ता भी तो हे मम्मी कितना भारी
मे तरा राजा बेटा हूँ, नही सवारी गाडी।''

यह कहकर मायूस हो गया ओर जोर से रोया
सुबह-सुबह ऑसू से ही अपने गालो को धोया।

मम्मी को आ गई दया, बोली ''मत जा स्कूल,
ये दिन हे हँसने-गाने के, मेरा बेटा फूल।''

मुन्ना आया गॉव

बहुत दिना क बाद शहर से मुन्ना आया गॉव।
आकर सबस पहल उसने छुए चचा के पॉव।

पुत्र चचा का राजू खुश हो बाला — "आओ भेया।
य दखा चर रही बकरियॉ, दूध दुहाती गेया।
जग बटा जाग, दखा खता मे हॅसते धान।
ओर नाचते मार यही इन गॉवो की पहचान।
सा वर्पा से बॉट रहा यह बरगद शीतल छॉव।"

पेड-झाडियॉ-खेत-पोखरे, पतली-टेढी राहे
देती लगी निमन्त्रण मुन्ना को फैलाकर बाहे।
खोया-सा उल्लासो मे वह हवा बना फिरता था
थक जाने पर हरी-भरी दूबो पर जा गिरता था।
नही लौटने को जी करता, जाता जिस भी ठाव ।

चद दिनो मे ही बढ आया सबसे इतना मेल
खेला करता दिन भर मिलजुल रग-रग क खेल।
सुना रहे थे एक गेज जब चाचा उसे कहानी
फूट पडा भोलेपन से ऑखो मे भरकर पानी —
''अच्छी है कोयल की कू-कू, कौवे का भी कॉव।
अब जाऊँगा नही शहर, मुझको भाता है गॉव ।''

काश, रोज ऐसा होता
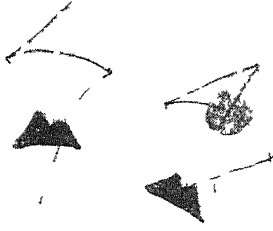
हुआ एक दिन एसा भी
यह पलट गई दुनिया।
कूद लगाकर चढी चॉद पर
दो दिन की मुनियॉ।

बाबा बस्ता लिए खडे थे,
पापा पकडे कान।
चपलू चिढा — 'इन्हे कब होगा
ए बी सी का ज्ञान।'

विद्यालय म भी सब कुछ था
उस दिन नया-नया।
टीचर जी सहमे थे,
बच्चो को आ गई दया।
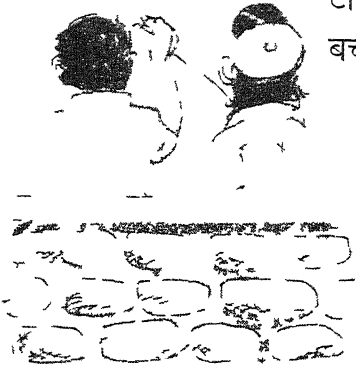
मुर्गा नही बने,
थे टीचर जी के भाग्य बडे।
फिर भी रहना पडा बेच पर
दिन भर खडे-खडे।

गत हुई तो नीरू से
नाना ने सुनी कहानी।
लीला ने लोरी गाई
तव जाकर सोई नानी।

काश, रोज ऐसा होना तो
आता मजा बडा।
जीवन हाता बच्चो का
खुशियो से
भरा-भरा।

मै तो इक छोटी बच्ची हूँ

मे ता इक छाटी बच्ची हॅू।
नही अक़्ल से पर कच्ची हॅू।।
खूब पटाई करती हॅू म।
सबक मन को हरती हॅू मे।।
छायी हॅू हर एक रग मे।
हर पल रहती हॅू उमग मे।।
नही कभी रहती मे चुप।
खाना खाती मे टुप-टुप।।
घर भर मे मै न्यारी हॅू।
मॉ कहती — 'उजियारी' हॅू।।
मै न हॅसूॅ, तो भोर नही हो।
हॅसी-खुशी चहॅुओर नही हो।।
फूलो का भी रस झर जाए।
सावन मे भी मोर नही हो।।
अत न समझो मुझको आम।
मुझे करो सिर झुका प्रणाम।।
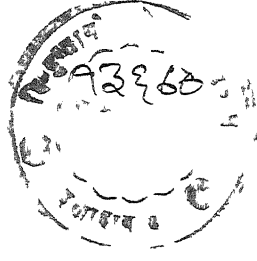
हूँ शहजादा

हूँ म बिल्कुल मीधा-मादा
माँ-पापा का हूँ शहजादा।
राज बात करना पटन की,
किन्तु भूल जाना हूँ वादा।
मन ह काइ गाना गाऊँ
पूव जनम की कथा मुनाऊँ।
था म तब लखनऊ का राजा
रहता था हरदम ही ताजा।
कइ-कइ थ नाकर-चाकर,
शीश झुकात थ मब आकर।
एक सलानी रानी थी,
सुन्दर-सुघड-सयानी थी।
पूरे बारह बच्चे थ
सभी बहुत ही अच्छे थे।
मे भी कितना अच्छा हूँ,
नही समझिए बच्चा हूँ।
खूब पढ़ूँगा मैं अबसे
बढ जाऊँगा म सबस।
अच्छे सदा करूँगा काम
देश का ऊँचा होगा नाम।

परिवार हमारा

कितना सुन्दर, कितना प्यारा
यह परिवार हमारा है।

मम्मी-पापा प्यारे-प्यारे,
नन्ही गुडिया-सी बहना।
उजले-उजले केशो वाली
दादी का तो क्या कहना।
रोचक-रोचक कथा सुनाती,
जब सोता जग सारा है।

कितना सुन्दर, कितना प्यारा
यह परिवार हमारा है।

पापा प्यार बडा देते है ।

पापा प्यार बडा ेते है ।

कभी गोद मे भर लेते, कधो पर कभी बिठाते है
कभी पकडकर ऊँगली मेरी बहुत दूर ले जाते है
कभी चूम लेते, पर अक्सर एक शरारत करते वे
मेरे नरम-नरम गालो पर अपनी मूँछ गडा देते है ।

खेला करते साथ हमारे, साथ हमारे पढते हे
केसी-कैसी कथा-कहानी जाने केसे गढते हे

लेकिन पता नही, अब तक वे बुद्धू मुझे समझत क्या
आते पहन मुखौटा, मुझको बनकर भूत डरा देते हे ।

रोज शाम जब दफ्तर से वे वापस घर आ जाते हे
कभी चॉकलेट, कभी मिठाई मेरी खातिर लाते है
ठोक़-ठोककर ताल, चले आते मुझसे कुश्ती लडने
लेकिन हम तो पहलवान है, उनको रोज हरा देते है ।

राज सुनात नइ कहानी
वड-बड सता की वाणी
अच्छ गुण हममे भरत हे
प्यार-दुलार बहुत करत हे
कभी विगडत भी पर उनको
हम सव रहत हे घेर ।

कभी न छल हे फटका पास
ईश्वर मे हे दृढ विश्वास
गीता-रामचरित मानस
पढते है नित श्रद्धावश
करके पूजा बडे प्यार से
हमे खिलाते है पेडे ।

गर्मी के मौसम मे

सूरज बना दहकती भट्ठी, धरती बनी तवा।
दिन म जलते रात उबलते कोइ नही दवा।
करे क्या बच्चे, बोलो ?

रात-रात भर नीद न आती, काट खाएँ मच्छर।
सुबह हुइ कि नही, गूँज उठता माँ का भी स्वर—
उठो, अब आँख खोलो !

हुआ पसीने से शरीर तर, घुटता ह अब दम।
पल-पल भर म प्यास सताती, हाय गए मर हम।
जरा शरबत तो घोलो !

अरी हवा, क्या तुम्हे हो गया, भूल गइ बहना ?
सूरज दादा तुमको भी अब मुश्किल है सहना।
नरम थोडा तो हो लो !

राज सुनात नइ कहानी
बड-बड सतो की वाणी
अच्छ गुण हममे भरत ह
प्यार-दुलार बहुत करत ह
कभी बिगडत भी, पर उनको
हम सब रहत है घर ।

कभी न छल है फटका पास
ईश्वर मे है दृढ विश्वास
गीता-रामचरित मानस
पढते है नित श्रद्धावश
करके पूजा बडे प्यार से
हमे खिलाते है पेडे ।
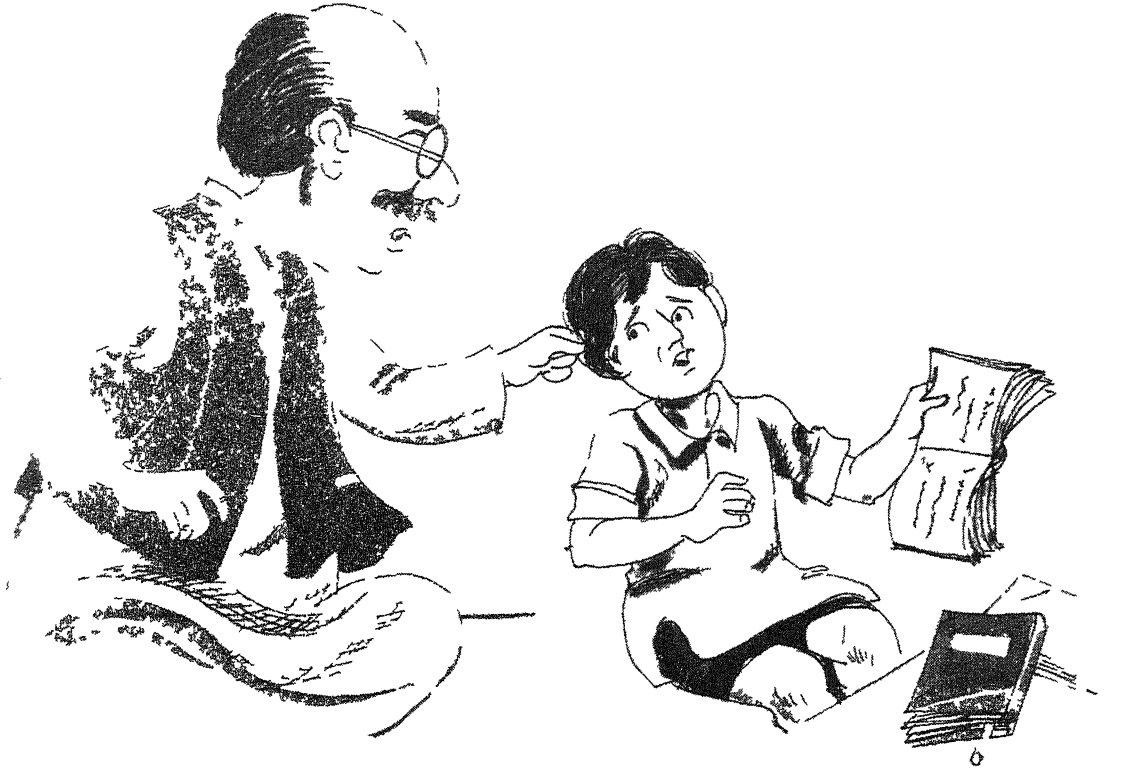
गर्मी के मौसम मे

सूरज वना दहकती भट्ठी धरती वनी तवा।
दिन म जलत, रात उबलत कोइ नही दया।
करे क्या बच्च, वाला ?

रात-रात भर नीद न आती, काट खाएँ मच्छर।
सुबह हुइ कि नही, गूँज उठता माँ का भी स्वर—
उठा, अब आँख खाला !

हुआ पसीने से शरीर तर, घुटता ह अब दम।
पल-पल भर म प्यास सताती, हाय गए मर हम।
जरा शरबत ता घोला !

अरी हवा, क्या तुम्हे हो गया, भूल गई बहना ?
सूरज दादा तुमको भी अब मुश्किल हे सहना।
नरम थोडा तो हो लो !

बादल गरजे घुडुम-घुडुम ।

आसमान काला हो आया, बादल गरज घुडुम-घुडुम ।

टर-टर करत मढक ताल-तलेया म
मार खा गए अपन ता-ता थेयो म
गाये भागी चली आ रही तेज, उठाए अपनी दुम ।

जलकुम्भी उग आयी हे हर खाइ मे
गध घुल रही माटी की पुरवाइ म
रग-बिरग तरह-तरह क बागो मे खिल उठे कुसुम ।

छप-छप पानी होगा पूर ऑगन मे
'भीगग'—यह सोच रहा मुन्ना मन म
पर पहले ही नही भीगने का मॉ ने दे दिया हुकुम ।
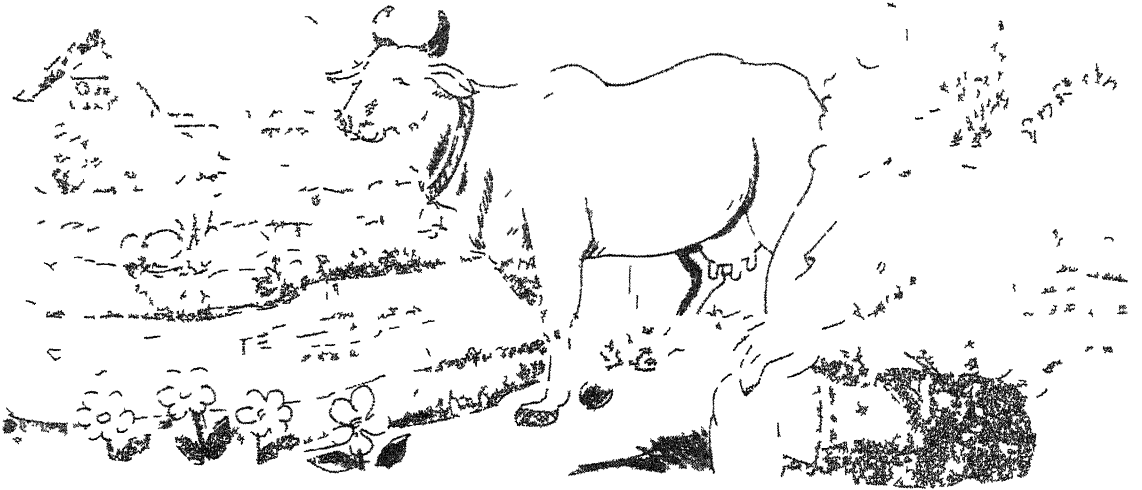
सिकुड गई है पूरी दुनिया

इतना जाडा, उफ ! थर-थर-थर
घर से कैस निकले टुनियॉ !

ऑखे खुलती नही, दूर तक
घना कोहरा छाया हे।
हाथ जेब से नही निकलते,
कसा मोसम आया हे।
देह समूची बरफ बन गइ,
दॉत बजाते हे हरमुनियॉ[1] !

कुछ ने हीटर जला रखा है,
कुछ अलाव ह ताप रह।
स्वटर-मफलर मे कसकर भी
कई लोग हे कॉप रह।

कुछ के घर बन रही रजाई
तुन-तुन धुनता रूई धुनियाँ[2] ।

दिन मे बारह बजे उनीदे
सूरज जी आ पाते हे।
बुझे स्वरा मे ही पछी भी
अपना गीत सुनाते है।
काम सबो के ठप्प पडे है,
सिकुड गई है पूरी दुनिया ।

1 हारमोनियम का अपभ्रंश रूप 2 रूई धुनकर रजाई बनानेवाला

कुछ क पर बन रही रजाई
तुन-तुन धुनता रूई धुनियाँ[2] ।

दिन म बारह बजे उनीदे
सूरज जी आ पाते हे।
बुझे स्वरो मे ही पछी भी
अपना गीत सुनाते है।
काम सबो क ठप्प पडे है,
सिकुड गई हे पूरी दुनिया ।

1 हारमानियम का अपभ्रश रूप 2 रूइ धुनकर रजाइ बनानवाला
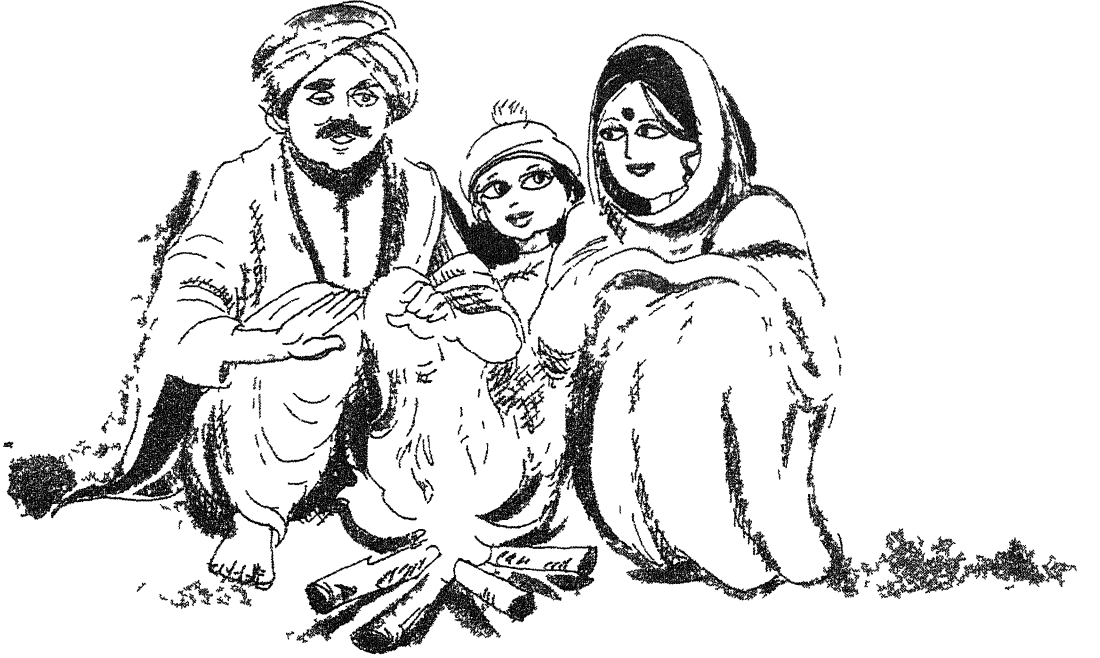
दिन चहकानवाल, रात महकाती
नानी कहती-'रातो म परियाँ आती
हमको गाना गाती बातो-बातो म
नदी किनार बठ चाँदनी रातो म
छम-छम करती 'टिप-टिप' छडियाँ लहरा क झाग म।"

अभी दूर ह गर्मी, जाडा चला गया
हवा मस्त बहती ह, सबकुछ नया-नया
छूट रह नव पिचकारी म भरकर रग

बाहर निकलो, चलो बगीचा, खेलेग
बन जाएगा चोर, जिसे हम छू देग
और कबड्डी, गुल्ली-डडा ओ' खो-खो
उछल-कूद धम-धमा चौकडी होने दो
बेठ टहनियो पर गाएँगे हम भी मधुमय राग मे।
सबसे प्यारा हे बसन्त ऋतु, कूकी कोयल बाग म।

सभी तरफ बज रहे ढोल-ढम, झाल-मृदग
डूब गया हे गाँव समूचा होली के मृदु फाग म

[illegible] चमकानेवाले, रात महकाती
[illegible] कहती- रातों म परियाँ आती
हमको [illegible] गाती बातों-बातों म
[illegible] चाँदनी रातों म
[illegible] 'टिप-टिप' [illegible] लहरा के आग म।'

[illegible] दूर है गर्मी, जाड़ा चला गया
[illegible] बहती है, सब कुछ नया-नया
[illegible] रह सब पिचकारी म भरकर रग

बाहर निकलो, चलो बगीचा, खेलेगे
बन जाएगा चोर, जिसे हम छू देगे
और कबड्डी, गुल्ली-डडा ओ' खो-खो
उछल-कूद धम-धमा चौकडी होने दो
बेठ टहनियो पर गाएँगे हम भी मधुमय राग मे।
सबसे प्यारा हे बसन्त ऋतु, कूकी कोयल बाग मे।

सभी तरफ बज रहे ढोल-ढम, झाल-मृदग
डूब गया है गाँव समूचा होली के मृदु फाग मे।

नदियाँ

कल-कल-छल-छल गाती नदियाँ
शीतल नीर बहाती नदियाँ।

हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई
सबकी प्यास बुझाती नदियाँ।

भेद-भाव ये तनिक न करती
मानवता की पाती नदियाँ।

[illegible] चहकानेवाले, रात महकाती
नानी कहती- रातों में परियाँ आती
[illegible] गाना गाती बातों-बातों में
[illegible] बैठ चाँदनी रातों में
[illegible] टिप-टिप फुलझड़ियाँ लहरा के आग में।'

[illegible] दूर है गर्मी, जाड़ा चला गया
[illegible] मस्त बहती है, सबकुछ नया-नया
[illegible] सब पिचकारी में भरकर रंग

बाहर निकलो, चलो बगीचा, खेलेंगे
बन जाएगा चोर, जिसे हम छू देंगे
और कबड्डी, गुल्ली-डंडा ओ' खो-खो
उछल-कूद धमा-धमा चौकड़ी होने दो
बैठ टहनिया पर गाएँगे हम भी मधुमय राग में।
सबसे प्यारा है बसन्त ऋतु, कूकी कोयल बाग में।

सभी तरफ बज रहे ढोल-ढम, झाल-मृदंग
डूब गया है गाँव समूचा होली के मृदु फाग में।

भोर

पूरब के गालों पर बनकर
लाल रंग छितराई भोर।
कितना शान्त, सरस, कोमल है
दूर क्षितिज का रेखा छोर।

घनी झाड़ियों-तरुओं में छिप
अभी अंधेरा सोया है।
अभी-अभी नन्हा भालू
'माँ दुद्धू'' कहकर रोया है।

चिडियाँ भरने लगी कठ म
अपनी शहनाई के स्वर।
फुदक-फुदक कर चोच खोलकर
गा-गा उठती घर-बाहर।

खिडकी से आया छूने जो
चपल पवन का एक प्रवाह।
दादाजी उठ चले घूमने,
लेकर लाठी, अपनी राह।

हरी-हरी दूबो पर बूँदे
पडी ओस की गाल-मटोल।
गइया लेट गयी जा उस पर
भेस रभाती है मुँह खोल।

निकल रहा अब दूर द्रुमा की
झुरमुट से रवि-लाल तश्तरी।
उस जान फल ललच रहीं ह
मुन्न की दो आँख बड़ी

जा जग जाएगा जल्दी अब
नींद-बिछौना [illegible]
उसकी खातिर [illegible]
लेकर [illegible]

दादी माँ मुट्ठी-भर दाना
आँगन में बिखराती रोज।
तुलसी के पेड़ के नीचे
फिर जमता है इनका भोज।

इस डाली पर, उस डाली पर
खेतों में, खलिहानों में।
ची-ची-चह-चह करते जाकर
गेहूँ-मकई-धानों में।

कभी इस जगह, कभी उस जगह
पल-भर में छू हो जाते।
'जीवन तो बढ़ते जाना है'—
शायद गीत यही गाते।
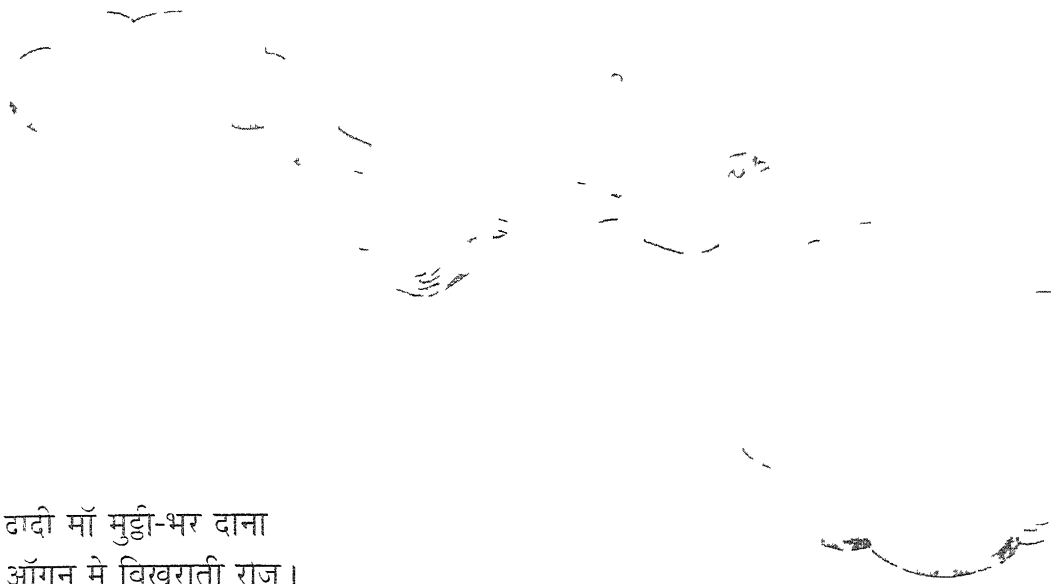
रोज बात करते होंगे ये
नभ में चाँद-सितारों से।
नील-गगन में उड़ने वाले
पंछी अपने यारों-से।

दादी माँ मुट्ठी-भर दाना
आँगन मे बिखराती रोज।
तुलसी क पिडे के नीच
फिर जमना हे इनका भोज।

इस डाली पर, उस डाली पर
खेता मे, खलिहानो म।
ची-ची-चह-चह करते जाकर
गेहूँ-मकई-धानो मे।

कभी इस जगह, कभी उस जगह
पल-भर मे छू हो जाते।
'जीवन तो बढते जाना हे'—
शायद गीत यही गाते।

रोज बात करते होगे ये
नभ मे चाँद-सितारो से।
नील-गगन मे उडने वाले
पछी अपने यारो-से।

तितली रानी आना री।

आना री आना ओ तितली रानी आना री।

फूलों के कानों में चुप-चुप क्या बतियाती हो
इसकी बात [illegible] जैसे तुम कहने जाती हो
चुप्पी अच्छी नहीं पड़ेगा क्या समझाना री।

इतने सारे रंग कहाँ से पाए हैं तूने
अपने प्यारे पंख ज़रा देना मुझको छूने
नहीं सताऊँगी बिल्कुल भी, मत डर जाना री।

भात बस तुमका गुलाव या जूही-चम्पा-वेली
इन सबसे क्या कम कोमल ह मेरी नरम हथेली
बालो, कितना तुम्हे पडेगा शहद चटाना री ।

इतनी बार बुलाती, फिर भी बडा अकडती हा
हम करती मनुहार ओर तुम नखरे धरती हा
मत आओ, पर समझा ठीक नही इतराना री ।

विस्तर तेरा पखुडिया का, मेरा मॉ का ऑचल
तुम पराग खाती, तो मै भी दूध-मिठाइ आ फल
भौंरे तुम्हे सुनाते, मुझको नानी गाना री ।

अकड रही हो इसीलिए न, पख तुम्हारे पास
जब चाहो फूलो पर बैठो या छू लो आकाश
ओर न पडता टीचर जी के डडे खाना री ।

शैतानी का फल

एक था बन्दर, बडा धुरधर।
शेतानी का पाले अन्दर।।
बिना काम के मारा फिरता।
उछल-कूद मे अक्सर गिरता।।
फिर भी आदत नही सुधारी।
जाता घर-घर, बाडी-बाडी।।
इक दिन दादा चश्मावाले।
हाथो मे अखबार सम्भाले।।
बरामदे पर अपने थे।
पर पलके लगे झपकने थे।।

नभी वही बन्दर शनान।
चुपके स यूँ टपका आन।।
रह ऊँघन ही दादा।
बन्दर चश्मा ल भागा।।
दख लिया पर पापा न।
दाड पड चश्मा लन।।
बन्दर थाडा घबराया।
जब पापा का पीछ पाया।।
सम्मुख दखा पड विशाल।
नीच जिसक था इक नाल।।
पकडी टहनी धरनी छाड।
पर टहनी थी कुछ कमजोर।।
गिरी टूटकर नीच जल म।
बन्दर डूब गया पल भर मे।।
बरबस बोल पडा इक जोगी।
शैताना की यही गति होगी।।

शरारती बन्दर

बन्दर मामा न पहनी थी
काट आर फुलपेन्ट।
टाइ एक गल म बाँधी
छिडक लिया फिर सन्ट।

मज-धजकर चल पडे घूमने
बन्दर जी बाजार।
शतानी का भूत तभी
उनपर हो गया सवार।

कुछ पत्थर हाथा मे ले
चढ गए एक बरगद पर।
इक सज्जन जव गुजर तो
द मारा उन पर पत्थर।

हे तो कोई भूत पेड पर
सबने की आशका।
तभी कही से मोटा-तगडा
एक वीर आ धमका।
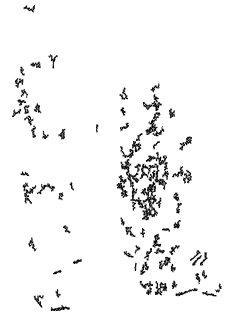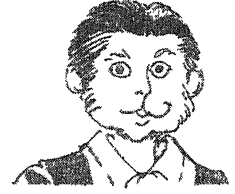
मोटू जी ने बात सुनी, तब
लोगो को समझाया।
'ठहरो तुम सब यही,
अभी मै भूत पकडकर लाया।'

मोटू जी चढ गए पेड पर
अब बन्दर घबराया।
भयवश भाग न पाया
छूटी टहनी, नीचे आया।

लोगो ने फौरन पकडा औ'
बेच दिया सरकस मे।
रोना ही रह गया सिर्फ
बन्दर मामा के वश मे।

मेरी बिल्ली

मेरी प्यारी छोटी बिल्ली।
घूम चुकी है पटना-दिल्ली।।
रंग सफेद है, आँख भूरी।
इसका नाम रखा है नूरी।।

मूँछ इसकी बिल्कुल न्यारी।
दुम तो छोटी है, पर प्यारी।।
बैठी रहती शान बघारे।
सारे करते इसको प्यारे।।

पर थोड़ी है चोर मिजाज।
तनिक न इसको आती लाज।।
दूध साफ कर देगी नूरी।
अगर तनिक मैं रक्खूँ दूरी।।

चूहों की है शत्रु पुरानी।
इन्हें याद ला देती नानी।।
दिल से है यह मुझे पसन्द।
ऐसी तो होती है चन्द।।

बिल्ली और चूहा

बिल्ली बाली—"म्याऊँ-म्याऊँ।"
चूहे स— 'तुमका खा जाऊँ।"
चूहा था कुछ मोटा-ताजा।
लगता था चूहो का राजा।।
बाला—"बिल्ली, मेरी नानी।
खाकर मुझे न कर नादानी।।
म हूँ सब चूहो का नेता।
मुझ बना लो आप चहेता।।
दूँगा प्रतिदिन कइ शिकार।
उन्ह मजे स खाना मार।।"
लोभी बिल्ली मान गई।
चूहे को सच जान गइ।।

चूहा लाने चला शिकार।
फिर क्यो आता ? हुआ फरार।।
हार गई बिल्ली बेचारी।
बल की होती हुई पिटारी।।
सच है तीक्ष्ण भले तलवार।
जाती किन्तु अकल से हार।।

काश! रोज ही आती होली

हाली का दिन सबको भाए।
आआ मिलकर नाच-गाएँ।।
मस्ती ह, खुशिया का पल हे।
आज सभी का दिल निश्छल ह।।
बोले सबसे प्यार की बाली।
रग-अबीर लगाएँ रोली।।
सबमे छायी नइ उमग
पिचकारी मे भर कर रग।।

पिचकारी से छूटे तीर।
उड़ा है बस रंग-अबीर।।
खाएँगे हम ढेर मिठाई।
पूआ पूरी, दही, मलाई।।
हर बच्चे के दिल की बोली।
काश! रोज ही आती होली।।

ऊँचा रहे तिरगा

गूँज उठा हर कोन मे जब
आजादी का मत्र।
पन्द्रह अगस्त सन सेतालीस को
भारत हुआ स्वतन्त्र।

मभी स्वतन्त्र देश रखते हे
जपना इक झडा प्यारा।
हमने चुना तिरगा,
अब यह अपनी ऑखो का तारा।

वीर पूवजा के शोणिन की
कीमत पर आया यह झडा।
समझ न लेना कोई ऐसा
इसमे हे बस कपडा-डडा।

प्रतिदिन मोते लात थे
अग्रजो के हथियार।
पर न थमा तूफान दिलो का,
रूका नही प्रतिकार।

भारतपुत्रो के जीवन पर
होता रहा प्रहार।
सीने से वीरो क
बहती रही लहू की धार।

इसी लहू के सागर से यह
सिंचित हुआ कमल है।
अपनी गरिमा का प्रतीक है,
भावों का सम्बल है।

कभी न झुकने पाए यह
उन्नत-मस्तक लहराए।
करे व्योम से बातें झूमे
संग पवन के गाए।

इसकी गौरव-रक्षा हेतु
करेंगे हम भी हर बलिदान।
अगर समय ने टेर लगाई
कर देंगे अर्पण निज प्राण।
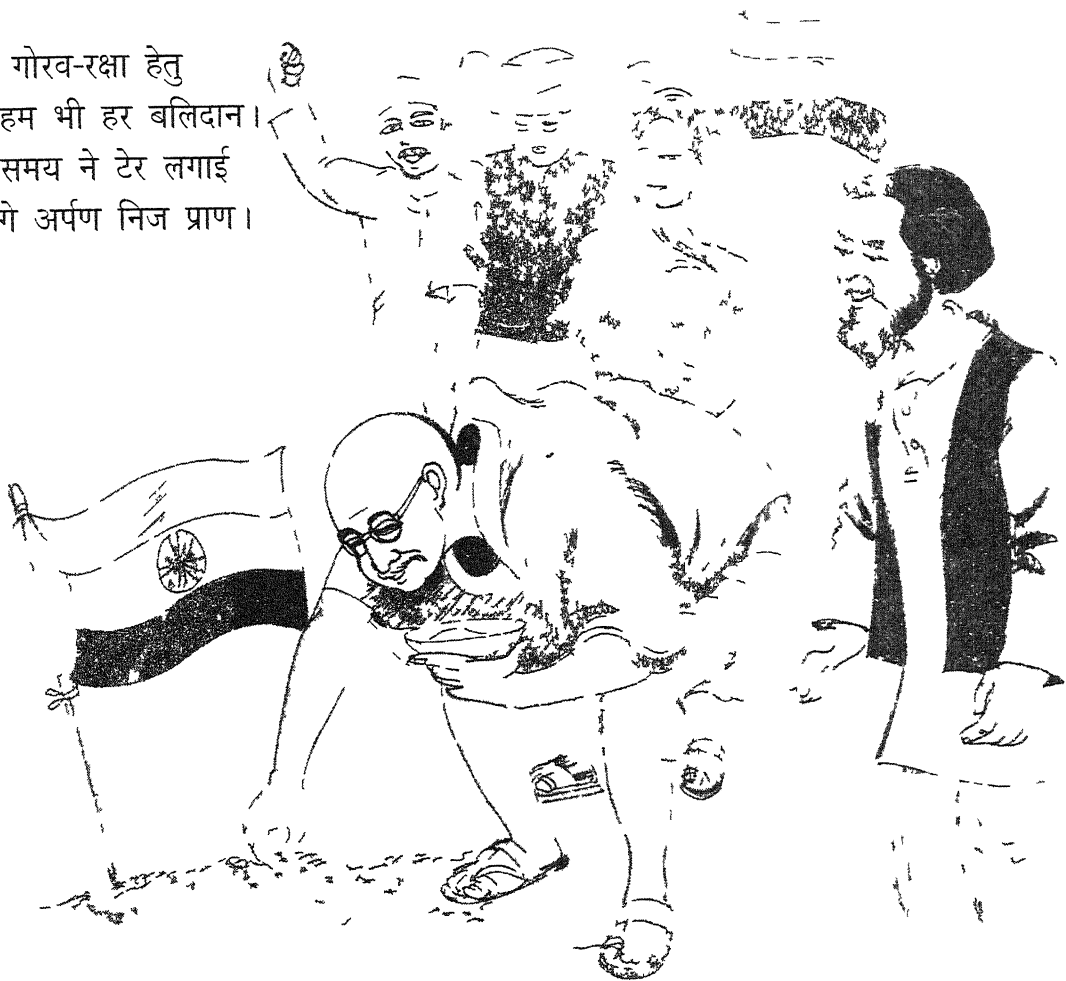
राखीवाला

देखो आया राखीवाला।
पहन रखा इक चश्मा काला।।
कुछ विचित्र है उसका नक्शा।
सिर पर रखा हुआ हे बक्सा।।
लाया राखी रग-बिरगी।
कुछ हे सस्ती, कुछ है महँगी।।
पीला, हरा, गुलाबी, लाल।
गाना गाता बडा कमाल।।
सुनकर बहने दौडी आई।
और सभी उत्सुक है भाई।।
खुश है अम्मा, दादी, खाला[1]।
देखो आया राखीवाला।।

1 मासी

आया दशहरा

सभी सजे, ढोल बजे, आया दशहरा ।

झूला है, सरकस है,
सुन्दर खिलौने है।
लहँगे मे गुडिया है,
चाबी के बौने है।
भीड-भाड इतनी है, सबकुछ है ठहरा ।

मेले म पूजा के
अनगिन पडाल है।

बच्च नाच अब
हुए खुशहाल ह।
टना नहीं ह किसी का कहना।
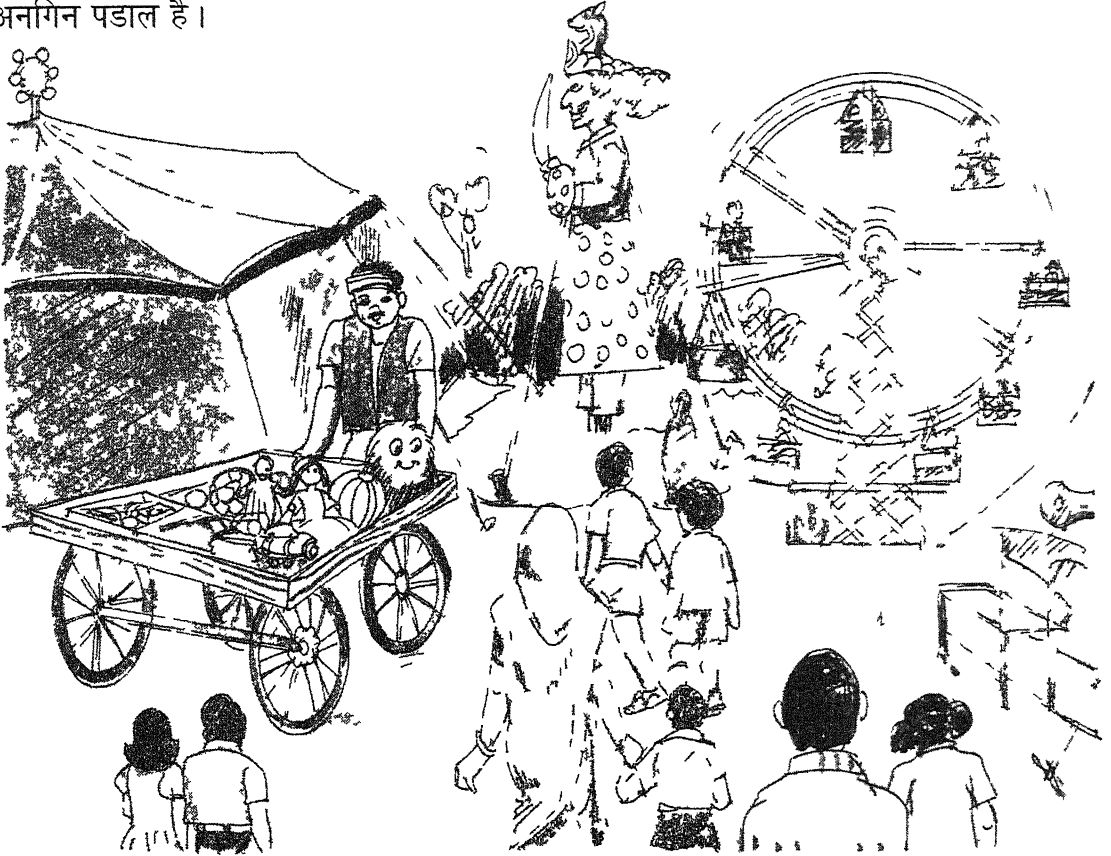
छूट पटाख ता
आया मन।
रावण न पाप की
पाया मजा।
न्याय क परचम दुनिया म फहरा

उठता ह प्रश्न एक
मन म मगर—
राम का रहीम स
कसा ह डर ''
जगह-जगह इतना पुलिस का क्यूँ पहरा ?
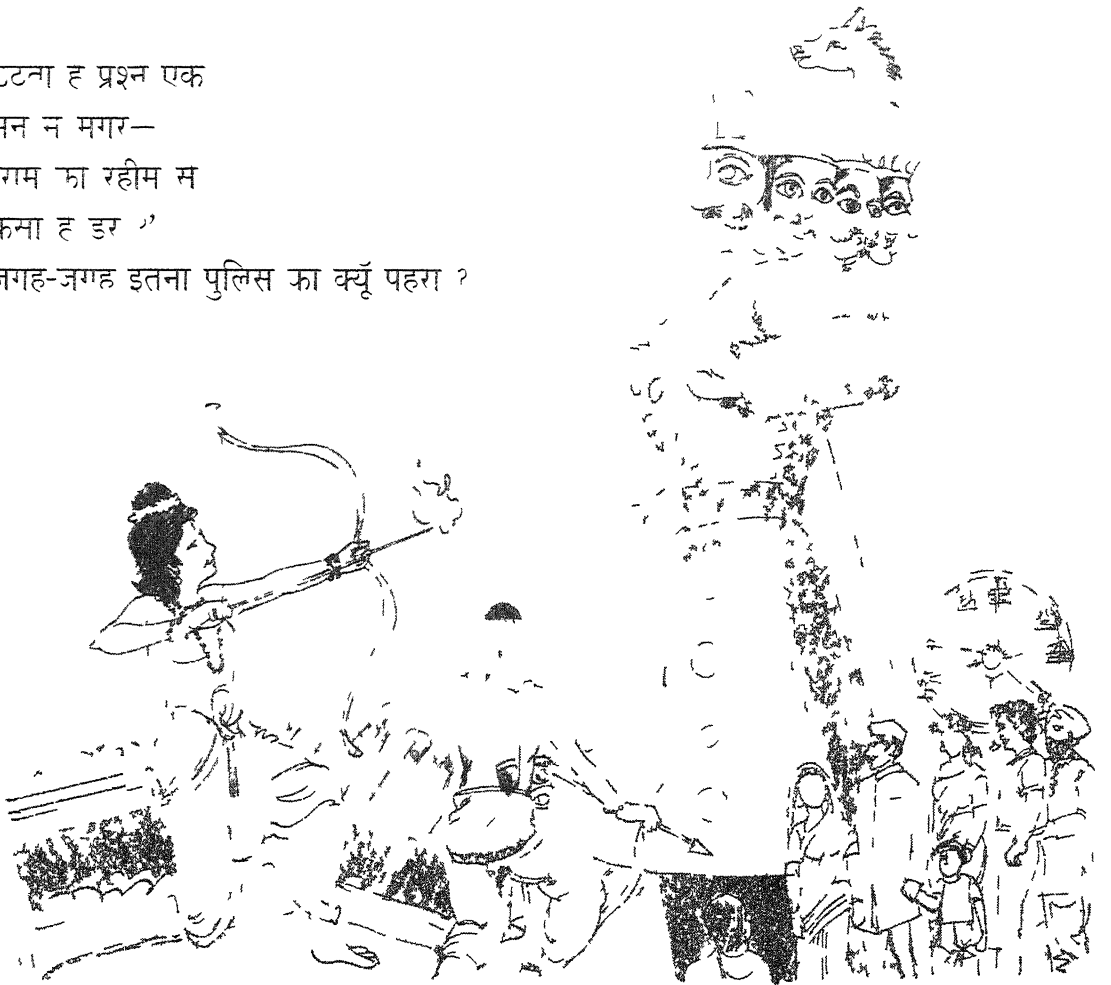
दीपो का त्योहार

आया दीपो का त्योहार !
सभी दिशाओ से खुशिया की करता हुआ घनी वाछार !

दीये मजे कतारा मे हे,
लगते बेहद प्यारे।
नील गगन से धरती पर ज्यो
उतरे चॉद-सितारे।
ऐसा लगता, जेसे दूल्हा बना हुआ हे यह ससार !

रोज दीप जलते थे, पर थी
ऐसी छटा, प्रकाश कहॉ ?
मिलकर रहने मे जो, एकाकी
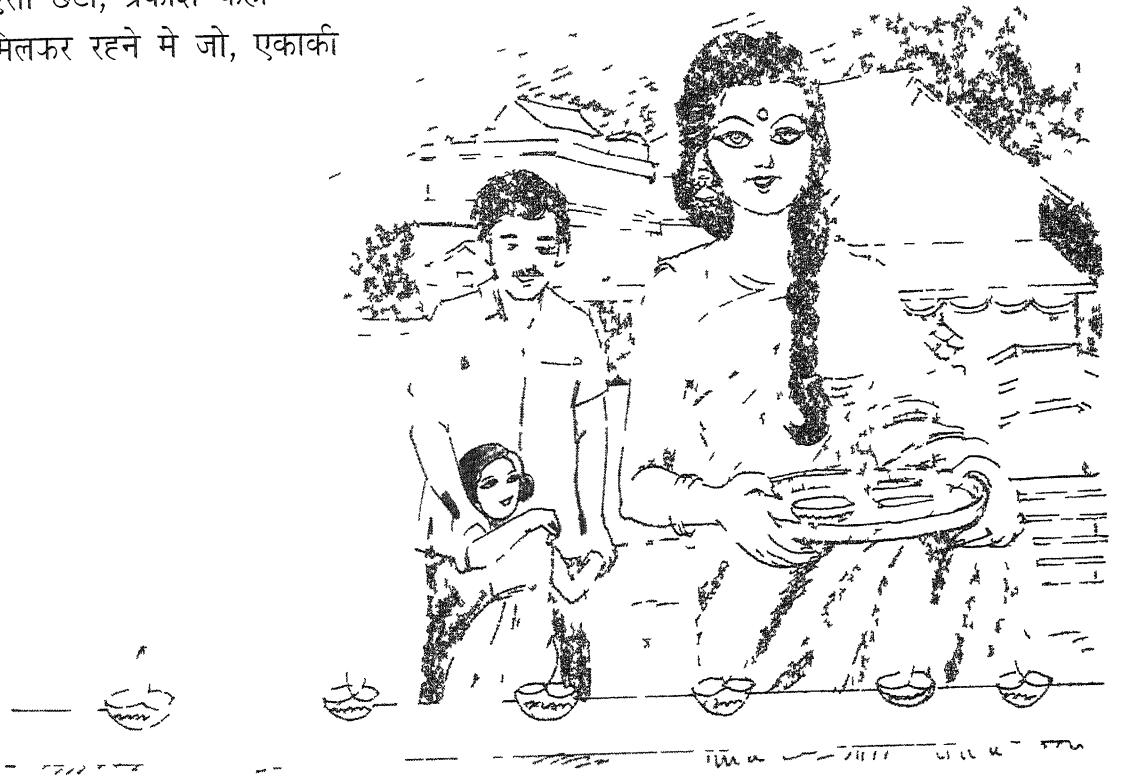
म वह उल्लास कहाँ `
य अनगिन जलत दीय कह रहे यही है बार-बार ।

आज दिला म भद-भाव की
ह गहरी जा खाइ, भर दे।
मभी दलिद्दर' भाग चलगे
मन की अगर सफाइ कर ल।
प्यार मित्रा चला न जाए यह शुभ अवसर भी बेकार ।

वाह पटाखो का क्या कहना ।

वाह ! पटाखो का क्या कहना, हाते हे बारूद भर ।

रग-बिरगे, तरह-तरह के, कइ-कई आकार क
मिलते है, कोने-कोने मे इस सुदर ससार क
ओर दीवाली के दिन तो बस इनका ही जलवा दिखना
कुछ बिखरते रश्मिपुज, तो कुछ फटकर आवाज कर ।

झिलमिल तारो की वर्षा-सी कही छूटती फुलझडियाँ
कही लगे चमचम लहँगे मे नाच रही अनगिन परियाँ
छूटे रॉकेट राजू का यूँ जलती तीली स छूकर
ज्यो धरती से आसमान पर पुच्छल तारे टूट पड ।

बच्च ता खुशिया म डूब फुदक-किलककर हे गाते
पर महग हा गए पटाख, सभी खरीद नही पात।
इस मायूसी म ही माटी की मूरत जैसा बनकर
ललचायी नजरा म रमुआ दख रहा था खड-खड।

राजू अच्छा बच्चा था, उसका भी पास बुलाया झट—
हम लागा स अलग खड क्या ? तुम भी हो कैस नटखट।
हाना मत मायूस, पटाख ला तुम भी छाडा भाई
बनत ह त्योहार, ताकि खुशिया क कण हर ओर झरे।

हीरा, सोना और कोयला

हीरे को अभिमान हा गया,
अपने पर कुछ शान हा गया।
सोना-कोयला म लड बेटा
उन दोनो पर कुछ यूँ ऐठा—
''मुझमे सुनो चमक हे इतनी
तेज बिजलियॉ चमके जितनी।
सारे रत्नो मे मै आला
मै हूँ अतिशय कीमत वाला।
मेरी कीमत का ये हाल
जिसने पा ली, मालामाल।
राजाओ का आभूषण हूँ
समझो मत छोटा-सा कण हूँ।''

सुन सोने को पहुँची पीडा
बोला—''अब चुप हो लो हीरा।
मै भी तुमसे तनिक नही कम
मुझसे बनते पायल छम-छम।
हार गले का, टीका, कगन—
ऐसे ही कितने आभूषण।
पहन जिन्हे झूमे हर नारी
दिखने लगती सुन्दर-प्यारी।
राजमहल हो तुम्हे मुबारक
मै तो पहुँचा हूँ घर-घर तक।
मेरा तो सिक्का चलता हे
तू भी मन-ही-मन जलता है।
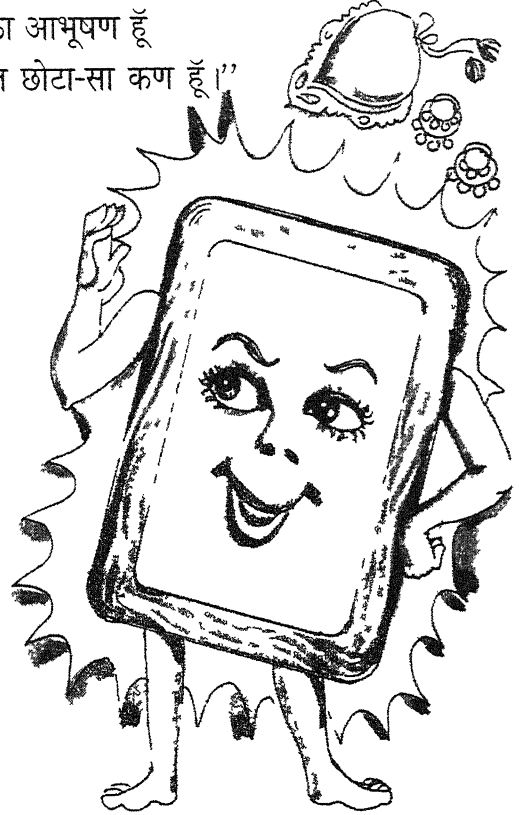
कोयल, तुम ही करो फैसला
हम दोनो मे कौन है बडा ?''

यह सब सुनकर बोला कोयला—
''मै कुरूप क्या करूँ फैसला ?''
कहकर थोडा-सा मुस्काया—
''तुम सब रुको, अभी मै आया।
गाँवो मे बच्चे भूखे है,
मुझको जल्दी जाना होगा।
खुद को जला-जलाकर यारो
चूल्हा मुझे जलाना होगा।
उद्योगो मे ईंधन बनकर
उत्पादन मे जुटना होगा।

रेल चलेगी, लेकिन पहले
मुझको हँस-हँस घुटना होगा।
कई और भी काम पडे है
यारो, माफ मुझे करना।
एक बात मानो पर मेरी—
आपस मे मत लड पडना।''

कोयला चला गया, पर दोनो
सके नही कुछ बोल।
सोच रहे थे—कोयले का तो
ज्यादा असली मोल।
वह जीवन देता लोगो को,
जग का करे विकास।
हमलोगो का काम शुरू तो
होता उसके बाद।

'कुट्टी का कारण'

आसमान में चमके रहते हो
प्यारे चन्दा मामा!
देखा, जब भी आई रजनी —
लाये यह खुशनामा।।

सो जाओ घर अपने जाकर
छोड़-छोड़ सब काम।
मुसकाकर कहते हैं मामा
अब कर लो आराम।।

सूरज दादा से लेकिन
क्यों रहती इनकी कुट्टी।
तभी निकलते हैं जब सूरज
ले लेते हैं छुट्टी।।

बात समझ मे नही समाती
नित जारी यह केसा क्रम।
दादाजी से जब भी पूछूँ,
कहते– यह सृष्टि का नियम'।।

पर क्या हम इतने भोले जो
यह जवाब टालू माने ?
करता जो विज्ञान प्रमाणित
उसको हम क्यूँ न जाने ?

नहीं दोष इसमें चन्दा का
और न ही दोषी दिनकर।
यह कुट्टी भी नही, आपसी
तालमेल हे अति सुन्दर।।

और हमारी धरती भी
नियमों से तनिक न ले विचलन।
इसकी घूर्णन गति निज पथ पर
है इस 'कुट्टी' का कारण।।
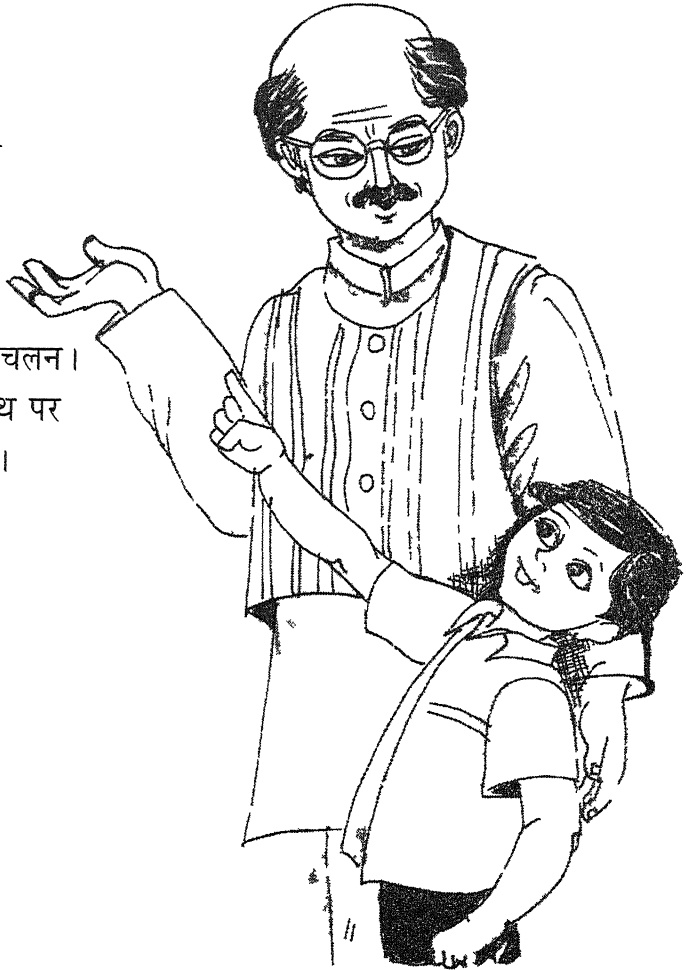
क्यो गिरती है ओस की बूँदे

वच्चा आआ तुम्ह बताएँ एक गज की वात।
क्या गिरती ह आस की बूँद तब आती ह रात।

गार करा जब पानी का दन हाग तुम ताप।
बनन लगता ह तजी म उजला-उजला भाप।

आग पुन जब शीतल तह पर भाप यही लात हा।
कुछ ही क्षण मे बूँद-बूँद माती-सा जल पात हा।

ठीक यही सिद्धान्त, आस क बनने मे आता हे।
दिन म क्रोधी सूर्य भूमि पर गर्मी फलाता हे।

बात समझ में नहीं समाती
नित जारी यह कैसा क्रम।
दादाजी से जब भी पूछूँ,
कहते– यह सृष्टि का नियम'।।

पर क्या हम इतने भोले जो
यह जवाब टालू मानें ?
करना जो विज्ञान प्रमाणित
उसको हम क्यूँ न जानें ?

नहीं दोष इसमें चन्दा का
और न ही दोषी दिनकर।
यह कुट्टी भी नहीं, आपसी
तालमेल है अति सुन्दर।।

और हमारी धरती भी
नियमों से तनिक न ले विचलन।
इसकी घूर्णन गति निज पथ पर
है इस 'कुट्टी' का कारण।।

क्यो गिरती है ओस की बूँदे
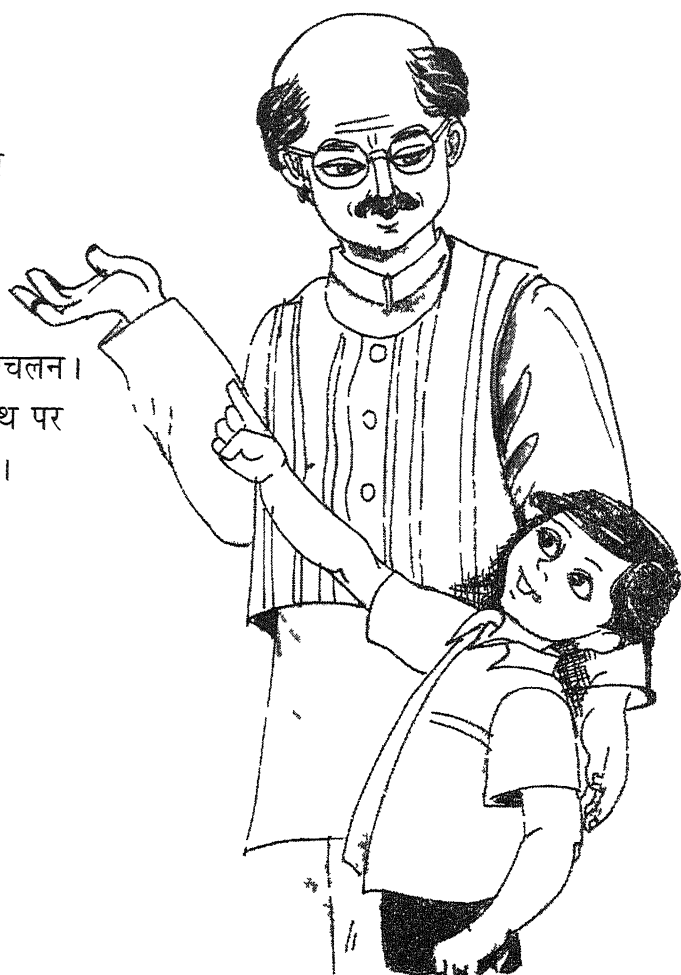
वच्चा, आआ तुम्ह वताएँ एक गज की वात।
क्या गिरती ह आस की बूँद तव आती ह रात।

गार करा, जब पानी का दत हाग तुम ताप।
बनन लगता ह तजी स उजला-उजला भाप।

आर पुन जव शीतल तह पर भाप यही लात हा।
कुछ ही क्षण म बूँद-बूँद माती-सा जल पात हा।

ठीक यही सिद्धान्त, आस क बनन म आता ह।
दिन म क्रोधी सूय भूमि पर गर्मी फलाता ह।

बन जाता है थोडा हिस्सा भाप भूमि के जल का।
दिन ढलने पर अगन लगती धरनी पर शीतलता।

शीतल हाती जाती धरती आर वायुमडल जब।
हाता पुन सघनित जल म, दिन का बना वाष्प तब।

ओर अधिक हागी जितनी भी रात बडी व शीतल।
उतना अधिक सघनित हाकर वाष्प बनाएगा जल।

यही सघनित जल प्रिय बच्चो, 'ओस' नाम पाता है।
फूल-पत्तिया-दूबा पर माती-सा बिछ जाता है।

अब बतला सकते हा क्यो जाडे मे ओस घनी होती ?
शक्ल कोहरे की ले क्यो ऑखो पर तनी-तनी होती ?
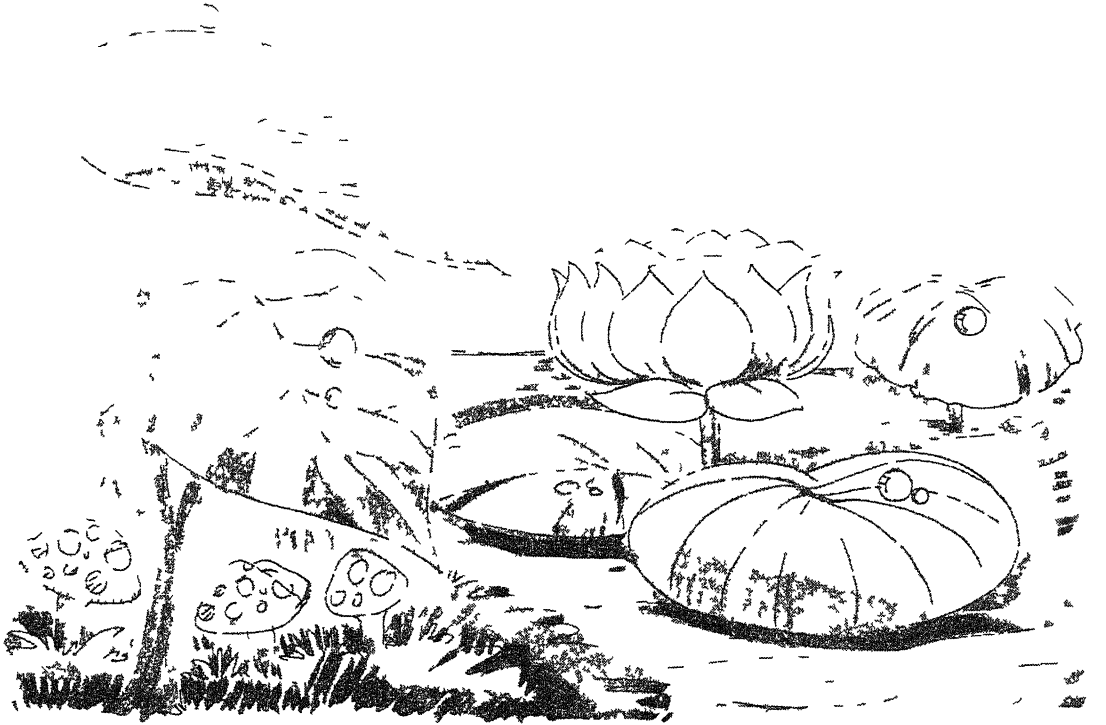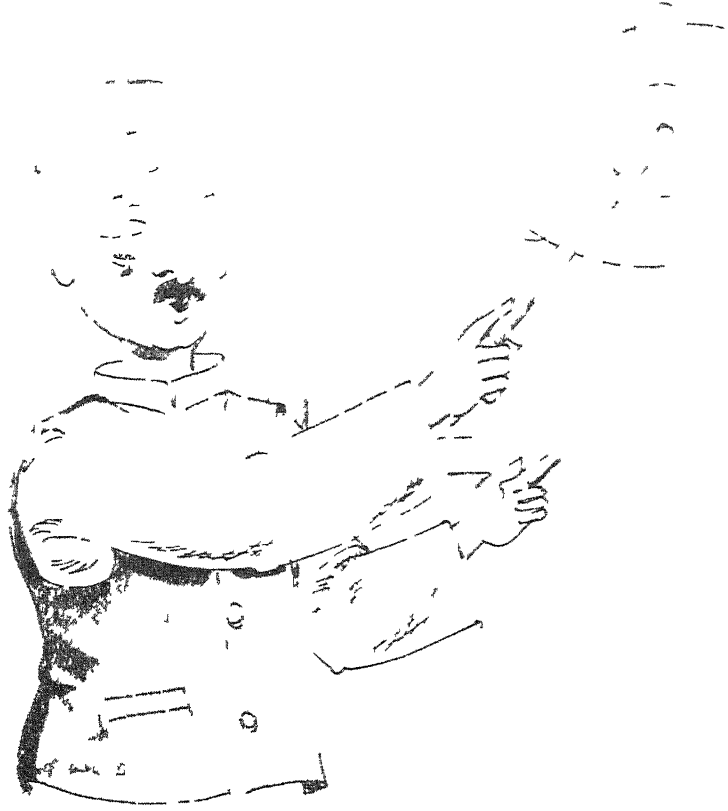
परमाणु के मूल कण

इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन ओ'
न्यूट्रॉन है मूल।
तीना कण परमाणु के—
जाना यह मत भूल।

होता इलेक्ट्रॉन का प्यारे
अतिनगण्य हे भार।
न्यूट्रॉन का एक इकाई
प्रोटॉन के समभार।

इलक्ट्रॉन [illegible] ह
धनाविष्ट प्राटॉन।
न्यूट्रॉन कण उदासीन हा
पडा कन्द्र म मान।

जितन ऋणआवश म
इलक्ट्रॉन हे ग्रस्त।
उतना ही ल धनावश
प्राटॉन खूब ह मस्त।

न्यूट्रॉन क साथ कन्द्र मे
प्रोटॉन का भी घर।
इनके चारा आर काटत
इलक्ट्रॉन चक्कर।

जीवन चक्र

कामल, सुन्दर प्यारी-प्यारी।
अधरा पर चिर-स्मित वाली।।
डठल म कलियाँ खिल जाती।
[illegible] लागा क मन भाती।।
नरम-हर पत्ता म पलती।
बनकर इक दिन फूल मचलती।।
पर यह सब कुछ होता नश्वर।
आर इन्हे [illegible] हाता झर।।
किन्तु बीज फिर भी रह जात।
धरती माँ की गोदी पात।।
उनपर रिमझिम मेघ बरसत।
फिर अकुर नव आते हँसते।।
बनत पेड लिये हरियाली।
खिलती फिर कलियाँ अति-प्यारी।।
जा बनते है, सब ढहते हे।
सभी कालक्रम मे बहत हे।।
लेकिन हर पोधा कहता हे।
पुनर्जनम होता रहता हे।।
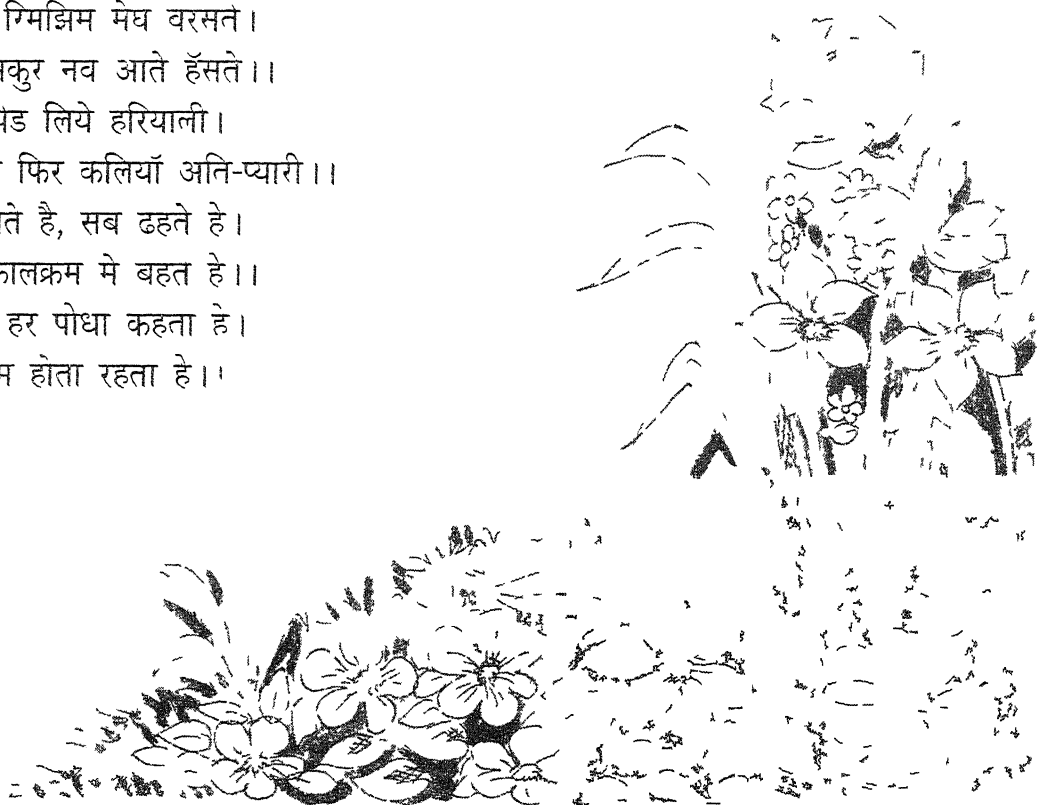
काँटो का सुख

फ़ॉटो मे पलकर गुलाब
बढ उपवन मे मुस्काता हे।
रग-बिरगे परिधाना मे
सजकर हमे लुभाता ह।

जिनने कष्ट सहा दुनिया म
मजिल उनकी तो तय ह।
जो घबरात बाधाओ से
केवल उनका ही भय ह।

कठिन समय मे विचलित हाकर
जो धीरज निज खोते हे।
आगे चलकर वही महाशय
सुबक-सुबक कर रोते है।

काँटों को सह बढ जाते जो
उनके फूल खिलते ही।
[illegible]
उनके दिन निकलते ही।

हिम्मत से जो चलते जाते
नहीं कभी घबराते हैं
जीवनरूपी गिरि की चोटी
तक वे ही जा पाते हैं

तो आओ प्रण करें हम भी
नहीं कभी घबराएँ हम।
बाधाओं के कुटिल किलाओं
तोड़-फोड़ बढ जाने को

बूँद पसीने की मोती है

कठिन परिश्रम करने का प्रण
नम्र ना भी चलन है।
जग जीवन की बगिया में
यही फूलत-फलत है।

सोए हुए शेर के मुँह में
हिरण स्वयं जाते क्या?
बिना बीज बोये, बाला,
पौधे भी उग पाते क्या?

'कर्महीन नर पावत नाही'—
बडे-बडा का कहना है।
कर्मशीलता ही यारो
जीवन का सच्चा गहना है।

कर्मवीर ले आ सकता है
आसमान से तारे तोड।
चाहे वह तो सकता हे
नदियो की भी धाराएँ मोड।

चाहे वह तो तेज हवा का
भी बहना द गक।
चाहे ता इतिहास बदल द
अदल-बदल दे लाक।

अत करा श्रम बहा पसीना
कमहीन का मुश्किल जीन
श्रमबूँद ही तनी रखगा
आग चलकर नग सीना

श्रम करन वालो न ही ता
पायी अब तक हर चाटी ह।
कान खोलकर सुन ऐ दुनिया—
'बूँद पसीने की माती ह।

हम गुलाब-पकज

भारत हम सबकी माता हे
हम उसकी सन्तान सरल।
माता की सम्मान-सुरक्षा मे
दगे अपना हर पल।

नही जाति है अपनी कोई
धम-पथ' हम नही मानते।
हम तो भारत मॉ क बच्चे,
मानव हे यह सिफ जानते।

अपने नामा से निकाल द
जाति-पॉति वाले उपनाम।
नासमझा का चलो बताएँ
सदा एक है अल्लाह-राम।

जो-जो जाति-पथ-धर्मा का
फैलाते है यहॉ जहर।
जिनके षड्यत्रा से डूबा
झगडो मे हर गॉव-शहर।

उनम हम सब ही निबटेगे
भेद भूलकर, घुल-मिलकर।
कॉटा-कीचो को जवाब द
हम गुलाब-पकज खिलकर।

1 सम्प्रदाय जसे हिन्द, मुसलमान सिख इसाइ आदि 2 जिन उपनामा म जाति का पता चलता [illegible]
आर ग्वाला का भद पदा करत ह।
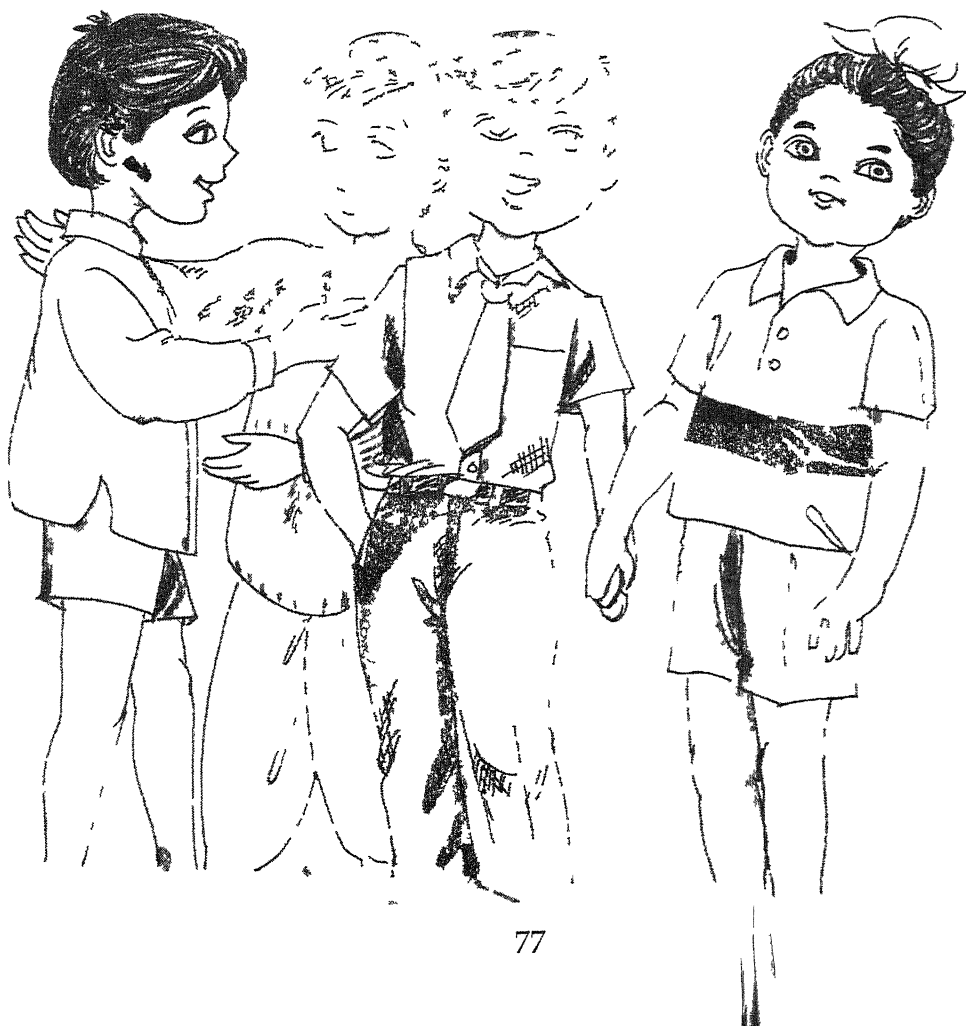
मधुवन के बच्चे

मधुवन मे कुछ शिकारियो का फैल गया आतक।
असहाय-सी वनमाता का विकल रो पडा अक।।

गूॅज उठा तब मॉ के बेट शेरो का हुॅकार।
मॉ क अश्रु सुखाने को दी बहा लहू की धार।।

गर्दनो क मोल दे गए मधुवन को इक मन्त्र।
आजादी मिल गई और आ गया वहॉ जनतन्त्र।।
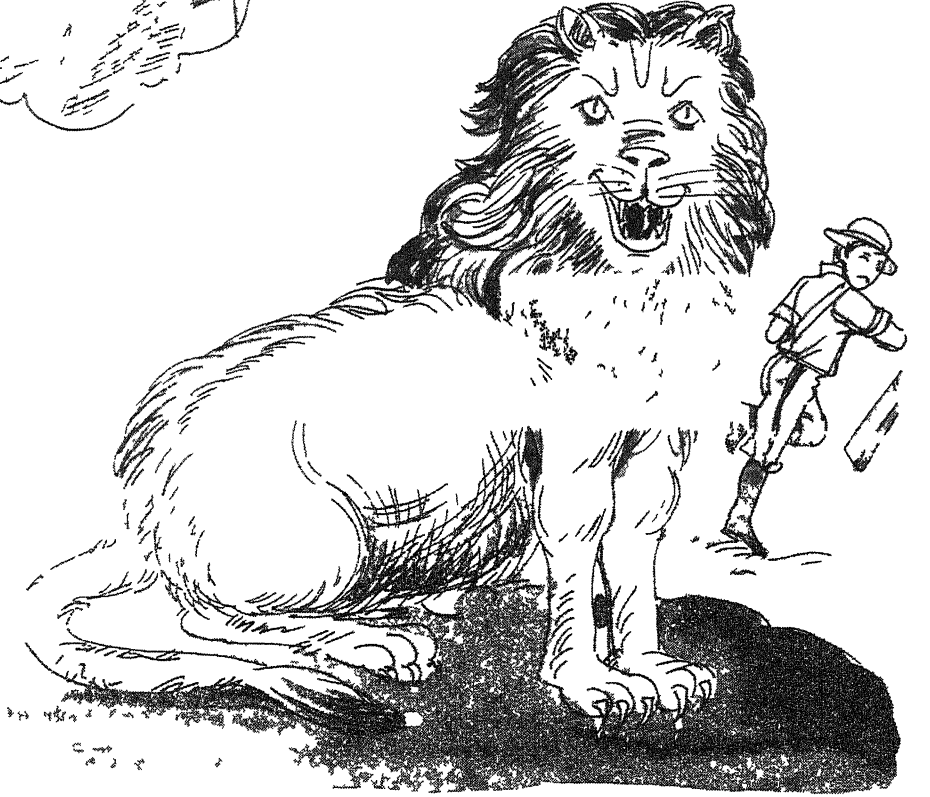
मॉ खिल उठी भूल जीवन की बीती सारी [illegible]
क्या पता था नहीं सपना [illegible]

[illegible] बन आँसू उमड़, [illegible]
किन्तु किसे था पता—पुन [illegible]

कुत्ते सूअर, गदहा के सिर चढ़ा अभागा ताज।
मात हुई जनतन्त्र की, [illegible]

भूल गए जनता का हित, बस रही नाद निज याद
फूली उनकी क्यारी, लेकिन हुआ चमन बरबाद।

अब तो नन्हे बच्चों पर ही सारी आस टिकी वतन की।
ये ही कल संघर्ष करेंगे बनकर ध्वनि हर धड़कन की।।

सबक सिखा देंगे ये उनको, जिनने खेला मधुवन से।
कल के कर्णधार ये बच्चे अभी पढ़ा करते मन से।।

अभिरजन कुमार

जन्म 6 जुलाइ 1976

शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से हिन्दी (प्रतिष्ठा) मे स्नातक। भारतीय जनसचार सस्थान, नयी दिल्ली से सर्वोच्च स्थान सहित हिन्दी पत्रकारिता मे स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

आजीविका के लिए टेलीविजन पत्रकारिता एव स्वतत्र लेखन। आकाशवाणी पर समाचार-वाचन।

हिन्दी के बिल्कुल युवा ओर ऊर्जावान साहित्यकारो मे अग्रणी।

1985 मे पहली कविता लिखी। तब से अब तक हिन्दी साहित्य की प्राय सभी महत्त्वपूर्ण विधाओ– यथा कविता, कहानी, लेख, व्यग्य आदि मे सैकडो रचनाए कीं। इनमे डेढ सौ से ज्यादा रचनाए विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित–आकाशवाणी से प्रसारित। पत्रकारिक रचनाए अलग। साहित्यिक पत्रकारिता मे कुछ विचारोत्तेजक बहसो के सूत्रधार।

बालकन जी बारी इटरनेशनल, नयी दिल्ली द्वारा 'राष्ट्रीय युवा कवि एवार्ड 1995 से सम्मानित। दसवे कादम्बिनी साहित्य महोत्सव, वाराणसी मे कहानी-लेखन का प्रथम पुरस्कार (1996)। भारतीय जनसचार सस्थान द्वारा हिन्दी पत्रकारिता के लिए अशोक जी एवार्ड (1998)।